ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर। सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर।

O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your devotces.

वर्ष 38, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 मई, 2015 से रविवार 24 मई, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली में 50 वर्ष पुराना आर्य समाज मंदिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी तोड़ा

उत्तरी दिल्ली नगर निगम के कृत्य से देशभर के आर्यजनों में भारी रोष

आर्य समाज के साथ सौतेला व्यवहार, नहीं सहेगा आर्य समाज – महाशय धर्मपाल

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर विरोध प्रदर्शन करें–प्रकाश आर्य

इसी स्थान पर होगा आर्य समाज मंदिर का पुनर्निर्माण : शक्ति प्रदर्शन करेगा आर्य समाज – धर्मपाल आर्य

यज्ञ एवं धरना-प्रदर्शन : रविवार 24 मई को यज्ञ प्रातः 10.30 बजे आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी, निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली

घटना स्थल पर लगातार चलता रहेगा पुनर्निर्माण एवं धरना – विनय आर्य

आज 20 मई 2015 को हुई घटना आर्य समाज मंदिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी स्थित आर्य समाज मंदिर को दिल्ली नगर निगम द्वारा गिराये जाने पर आर्य जनता में भारी रोष व्याप्त है। घटना की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में आर्य जनों का समूह उमड़ पड़ा। विरोध प्रदर्शन करते हुए इसे आर्यो ने कहा कि यह एक भ्रष्ट कुकृत्य है। देश एवं विदेश के आर्यो द्वारा घटना की निन्दा के सन्देश प्राप्त हो रहे हैं। यह दिल्ली सरकार के लिए भी शर्म सार कर देने वाला कार्य है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं देश-विदेश की समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के उच्च आधिकारियों ने विश्व के समस्त आर्यो का आह्वान करते हुए कहा कि रविवार 24 मई 2015 को प्रातः 10 बजे आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी स्थल पर भारी संख्या में पहुंचे यह आर्यो की परीक्षा की घड़ी है। जब-जब आर्य समाज पर काई दोषारोपण अथवा अत्याचार हुआ तब-तब आर्य समाज ने आन्दोलन व सत्याग्रह किये, आर्यो आज भी वह समय आ गया है कि उक्त स्थल पर पहुंचकर यज्ञ व धरना प्रदर्शन में बढ़चढ़कर भाग लें और इसी स्थल पर आर्य समाज का पुनर्निर्माण कर आन्दोलन को सफल बनाने में पूर्ण योगदान दें और अन्यायकारियों को दंड दिलाने में संगठन का सहयोग करें। विदित हो सन् 1962 में, पर्यावरण शुद्धि, समाज सुधार तथा ''वैदिक'' शिक्षा के प्रचार-प्रसार ...शेष पृष्ठ 8 पर

आर्यजन, आर्य समाजें एवं आर्य संसस्थाएं अधिकाधिक संख्या में प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री को विरोध पत्र, फैक्स एवं ईमेल भेजें।

डी.सी.एम. रेलवे कालोनी स्थित आर्य समाज मंदिर जिसे दिल्ली नगर निगम ने तोड़ दिया। घटना स्थल पर पड़ा आर्य समाज मंदिर का बोर्ड।

मंदिर तोड़ने के बाद बिखरा हुआ आर्य समाज का रिकार्ड फोटोग्राफ एवं अन्य सामान इकट्ठा करते हुए आर्य समाज के अधिकारीगण।

पहुंचने का मार्ग- डी.सी.एम. चौक से टायर मार्किट गौशाला रोड पर कुछ दूर आगे आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी, नई दिल्ली

मंदिर स्थल पर निरंतर यज्ञ एवं पुनर्निर्माण का कार्य करते कार सेवक।

वेद-स्वाध्याय

प्रभुभक्त संसार-महासागर से तर जाते हैं

आचार्य अभयदेव

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः।
तरत् स मन्दी धावति।। -ऋ0 9/58/1, साम0 पू0 6/1/2/4
ऋषिः- वत्सारः।। देवता- पवमानः सोमः।। छन्दः- निचृद्गायत्री।।

शब्दार्थः- मन्दी-जो **भक्ति**-स्तुति करने वाला, स्वयं तृप्त, आनन्दमग्न पुरुष होता है **सः** - वह **तरत्** -तर जाता है **सः**- वह **सुतस्य**-उत्पन्न की गई **अन्धसः**- आध्यानयुक्त प्राण व वाणी की **धार या**-धारा के साथ **धावति**-ऊपर वेग से उठता जाता है। **सः मंदी**- वह आनन्द तृप्त **तरत्**-तर जाता है, **धावति**-उर्ध्वगति द्वारा ऊपर चढ़ जाता है।

विनय- हे दुःख और पाप से तरना चाहने वाले भाइयो! देखो, कोई हैं, जोकि तर गये हैं। इस दुस्तर दीखने वाले संसार-महासागर से तरा जा सकता है-सचमुच तरा जा सकता है, परंतु तरता वह है जो ''मन्दी'' है। क्या तुम भगवान् की भक्ति-स्तुति में रमने वाले हो? क्या इस भजन रस से तुम्हारा अन्तः करण तृप्त हो गया है? क्या तुम्हारा अपना आन्तर (अन्तः) आनन्द से परिपूर्ण हो गया है, अर्थात् तृप्त होकर तुम्हें अब संसार की अन्य किसी वस्तु की-किसी भी वस्तु की कामना नहीं रही है? क्या तुम ऐसे मस्त हो गये हो? ऐसे आत्माराम हो गये हो? ''मन्दी'' होने के लक्षण तो ये ही है। देखो, ऐसे ''मन्दी'' तरते जा रहे हैं और तर गये हैं। यह अवस्था कैसे प्राप्त होती है? जब भजन करने से अन्दर सोई पड़ी हुई शक्ति जागती है तो वह प्राण, वाणी और मन को उज्जीवित करती हुई ऊपर की ओर चढ़ने लगती है। हठ-योगियों की परिभाषा में इसे कुण्डलिनी का जागरण और प्राणोत्थान कहते हैं। इस कुण्डलिनी का वास्तविक जागरण ही तरना शुरू करना है। प्राण की धारा मूलाधार से उठकर ऊपर चढ़ने लगती है, हैमवती शक्ति नाचती-कूदती हुई, भजन-स्तुति करती हुई मार्ग में प्राण, वाणी, मन, के अद्भुत चमत्कार दिखाती हुई ऊपर, अपने शिवरूप स्वामी की ओर चढ़ने लगती है। यह आध्यान अर्थात् मानसिक चेतना से युक्त प्राणधारा के रूप में क्रमशः ऊपर जाती हुई अद्भुत होती है। यही उत्पन्न किये ''अन्धस्'' (सोम) की धारा है जिसके साथ-साथ आत्मा ऊंची होती जाती है। इसी धारा के साथ 'मंदी' नामक भक्त की ऊर्ध्वगति होती है। प्रसिद्ध सात लोक अन्दर ही हैं। उन्नत होता हुआ आत्मा इन सब लोकों को पार करता हुआ सत्यलोक में पहुंचकर पूर्ण स्वतंत्र हो जाता है-बिल्कुल पार उतर जाता है। प्राण, वाणी, मन आदि शक्तियां शिर के सत्यलोक में जाकर ठहर जाती हैं और समाधि सिद्ध हो जाती है। इस प्रकार देखो! ''मन्दी'' (भगवान् का भक्त) दुःख-सागर को तर जाता है-ऊपर पहुंच जाता है। अहो! इस पुण्य घटना का विचार करना इसे कल्पना की आंखों से देखना-भी कितना ऊंचा उठाने वाला है। ''तरत् स मंदी धावति'' ''तरत् स मन्दी धावति।।'' **-साभार वैदिक विनय**

कश्मीर समस्या से संबंधित संस्मरण

लाला राम गोपाल जी शालवाले

महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरू व कांग्रेस की नीतियों का खुलकर विरोध करने वाले लाला राम गोपाल शालवाले ने वर्तमान कश्मीर समस्या को देश के विभाजन के समय ही सुलझाने के लिए पं. नेहरू के सामने कश्मीर में भूतपूर्व सैनिकों को परिवार सहित बसाने का प्रस्ताव कई बार रखा जिसे प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू ने हर बार मानने से इंकार कर दिया। लाला जी ने अपने लोक सभा सदस्यता के कार्यकाल में हिन्दू-विरोधी विचार धारा का विरोध करने वालों का खुलकर मुकाबला किया और उन्हें उचित जवाब दिया। समाज व देश के हितों की रक्षा करते हुए लाला राम गोपाल जी ने बाद में संन्यास ग्रहण कर लिया और स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के रूप में देश की विभिन्न आर्य संस्थाओं के साथ जुड़कर वैदिक प्रचार में संलग्न रहे। यह संस्मरण उनके पुत्र श्री ओंकार नाथ शालवाले द्वारा लिखित पाठकों के संज्ञान हेतु प्रकाशित किया जा रहा है। **- सम्पादक**

मैं अपने पिता जी के विषय में संस्मरण लिख रहा हूं।

जैसा उन्होंने यदा-कदा चर्चा में बताया उसे आधार बना कर मैं सब नीचे लिख रहा हूं। ला. राम गोपाल जी का बचपन बहुत आराम से रईसी ठाट-बाट में गुजर रहा था। उनके पिता श्री नन्दलाल जी की श्रीनगर कश्मीर में जमीन जायदाद और उस पर फैली खेतीबाड़ी का काम अत्यंत फैला हुआ था। परिवार हर तरह से खुशहाल था। थोड़े समय बाद उनके पिता जी का देहांत हो गया। कहते हैं वृक्ष की छाया और मनुष्य की छाया उसके साथ ही चली जाती है। सो ला. राम गोपाल जी छोटी आयु में ही अपने परिजन मां-भाइयों सहित श्री नगर छोड़कर आना पड़ा। अमृतसर आकर जीवन यापन के लिए पढ़ाई छोड़कर नौकरी करनी पड़ी। इसी दौरान उनका साक्षात्कार अपने मामा श्री देवीदास से हुआ जिनसे उन्होंने कुश्ती के दाव पेंच सीखे और वे कुश्ती लड़ने में माहिर हो गए। गुरुकुल एटा के स्वामी ब्रह्मानन्द जी से मुलाकात होती रहती थी, जिसमें आर्य समाज की विचारधारा पर चर्चा होती रहती थी। इसी दौरान दिल्ली आने का मन बन गया। सन् 1923 में ला. राम गोपाल जी दिल्ली में आ गये। दिल्ली आकर उनका संपर्क पं. राम चन्द्र देहलवी, पं. देवेन्द्र लाल शास्त्री, लाल चतुरसेन गुप्त, देशराज गुप्ता (प्रैस वाले) प्रो. रामसिंह, पं. व्यास देव शास्त्री, पं.चन्द्र गुप्त वेदालंकार, वैद्य मूलचन्द्र आर्य आदि अनेक नेताओं से दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से संबंध बढ़ने लगे। राजधानी दिल्ली में अपना प्रभाव जमाते हुये सारे भारत में प्रचार कार्य में आप जुट गये, जिससे आप को प्रसिद्धि मिलने लगी।

वीर सावरकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस आदि क्रांतिकारी नेताओं से संपर्क साधने में आपको सफलता प्राप्त हुई, जिसके कारण आपने महात्मा गांधी पं. जवाहर लाल नेहरू और कांग्रेस की नीतियों का खुलकर अपने जीवन में विरोध किया, जिसके कारण आपको 23 बार जेल यात्रा करनी पड़ी।

एक बार एक शिष्ट मंडल के साथ जिसमें पं. राम चंद्र देहवी, मेहरचंद जी महाजन आदि सामाजिक नेता शामिल थे। ला. राम गोपाल देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू से मिलने गए और कश्मीर में भूतपूर्व सैनिकों को परिवार सहित बसाने का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को पं. नेहरू ने मानने से इंकार कर दिया। प्रधानमंत्री को समझाने की बहुत को. शिश की लेकिन पं. नेहरू ने इसे स्वीकार नहीं किया। ला. राम गोपाल जी ने तुरंत अपने शिष्टमंडल को उठ जाने का संकेत देकर वार्तालाप को विराम दे दिया। यह पं. नेहरू से पहली और आखिरी मुलाकात ला. राम गोपाल जी की थी। इसके पश्चात् श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, चौ. चरण सिंह जब प्रधान मंत्री बने उनसे कई बार ला. राम गोपाल जी शिष्ट मंडलों के साथ मिलते रहे और उनसे अपनी बात मनवाते रहे।

सन् 1967 से 1970 के बीच जब ला. राम गोपाल जी लोकसभा के सदस्य रहे उस दौरान हिन्दू हितों के ऊपर जब भी विरोधियों द्वारा हमला होता तब-तब ला. राम गोपाल हिन्दू विरोधी विचारधारा का खुलकर मुकाबला करते थे और विरोधियों को उचित जवाब देते थे। लोक सभा का रिकार्ड इस बात का सबूत है। ला. राम गोपाल जी को लोकसभा सत्र में प्रातः प्रायः शामिल होना पड़ता था। दोपहर के भोजन के बाद वह लोकसभा सत्र से वापस अपने सामाजिक कार्यो का निर्वहन करते थे। एक दिन लोकसभा में उनके साथी पं. प्रकाश वीर शास्त्री पं. शिव कुमार शास्त्री, श्री ओम प्रक. श त्यागी, प्रो. बलराज मधोक आदि ने ला. राम गोपाल जी को घेर लिया और सब कहने लगे कल आप अपने सामजिक कार्य निपटा कर भोजन अवकाश के बाद आना। कल मुस्लिमों के बारे में सरकार ने उनके प्रस्ताव पर समय नियत किया है। इस प्रकार अपने साथियों की सलाह पर ला. राम गोपाल जी अगले दिन भोजनावकाश के बाद लोक सभा सत्र में शामिल हुए। लोकसभा शुरू हुई और मुस्लिम प्रवक्ता बहुत तैयारी के साथ कागजात फाईले आदि लेकर आये थे। एक मुस्लिम नेता बोला, दूसरा नेता बोला सब एक सुर में बोल रहे थे। सरकार द्वारा दिये गए अल्प संख्यकों को विशेष अनुदान देने पर भी ये नेता सुसम्य न थे, न धन्यवाद दे रहे थे बल्कि शिकायत पर शिकायत ही करते दिखे। एक मुस्लिम नेता ने अपने भाषण में लोक सभा में कह दिया कि यह गोवध बंद करवाने वाले हिंदू नेता बात तो गोवध बंद कराने की करते हैं लेकिन इनके घरों में चमड़े की चीजें प्रयोग में लाई जाती हैं। इस प्रसंग में ला. राम गोपाल जी खड़े हो गये और प्वाइंट ऑफ ऑर्डर उठाकर अपना जूता लोकसभा में दिखाने लगे। लोकसभा अध्यक्ष श्री नीलम संजीव रैडी ने कहा मि. शाल वाले आप जूता क्यों दिखा रहे हैं।

लाला जी ने कहा कि मेरे जूते में ऊपर कपड़ा है तले में रबड़ का सोल है। चमड़ा बिल्कुल नहीं है। अध्यक्ष महोदय आप मुस्लिम नेताओं को कहें कि वे अपनी बात कहें। आरोप न लगायें। फिर ला. राम गोपाल जी ने अपने साथी मित्रों से इशारे में कहा वे कुछ मुस्लिमों के खिलाफ बोलें लेकिन कोई कुछ न बोला। इसके बाद अन्य मुस्लिम प्रवक्ता ने कहना आरम्भ किया। वही शिकायत ही शिकायत करते रहे। अब दुबारा प्वाइंट ऑफ आर्डर ला. राम गोपाल जी ने उठाया और पूछा कि सदन को बताया जाये कि भारत के निजाम को दारुल हरब ये मुस्लिम मानते हैं या दारूल इस्लाम मानते हैं? इतना सुनते ही सारे मुस्लिम नेता लोक सभा सदन छोड़कर बाहर चले गए। सारी डिबेट खत्म हो गई। लोक सभा अध्यक्ष ने सदन में घोषणा की क्या कोई सदस्य शाल वाले की बात की व्याख्या करके बता सकता है? किन्तु कोई लोक सभा सांसद इस पर नहीं बोला। पुनः अध्यक्ष ने शाल वाले से प्रार्थना कि वे अपनी कही बात पर रोशनी डालें। तब श्री शाल वाले ने कहा कि कुरान में इन दोनों हालात का वर्णन किया गया है। जब मुस्लिम आबादी कम हो तो उन्हें शिक्षा दी जाती हैं ''दब कर रहो। मेल मिलाप बढ़ाओ। इस हाल को दारुल हरब कहा जाता है। लेकिन अपनी आबादी बढ़ाने की कोशिश अन्दरखाने करते रहो। जब मुस्लिम आबादी बढ़ जाये और ताकत बन जाये तो काफिरों को लूटो-मारो-उनकी हत्या करो और परेशान करते रहो। इस हालत को दारुल इस्लाम कहा गया है।'' श्री शाल वाले की सारी व्याख्या को सुन कर सारा सदन अवाक् रहा गया अब सारे मित्र ला. राम गोपाल जी को धन्यवाद देने लगे।

क्या वेदों में अश्लीलता है?

वेदों के विषय में कुछ लोगों को यह भ्रान्ति है कि वेदों में अश्लीलता का वर्णन है। इस विषय को समझने की पर्याप्त आवश्यकता है क्योंकि इस भ्रान्ति के कारण वेदों के प्रति जनमानस में वेदों के प्रति आस्था एवं विश्वास प्रभावित होते हैं। वेदों में अश्लीलता की चर्चा पश्चिमी विद्वान ग्रिफ्फिथ ने की है जिसे देखने से उनकी विद्वता पर एक प्रश्न चिह्न सा लगता है। यदि ग्रिफ्फिथ महोदय को हिन्दी या संस्कृत भाषा का जरा भी बोध होता तो शायद वे ऐसी बातें न करते। हिन्दी भाषा में अनेक अलंकारों का प्रयोग किया जाता है जिसमें एक रूपक अलंकार भी होता है जिसमें किसी भी शब्द के दो अर्थ हो जाते हैं। एक महाकवि ने अपनी रचना में भी इसी अलंकार का प्रयोग करते हुए लिखा है 'तीन बेर खाती तें वे तीन बेर खाती हैं, ठीक यही बात हमारे वेदों में भी निहित है। ऐसे में पश्चिमी विद्वान ग्रिफ्फिथ के ज्ञान को क्षीण कहना अतिश्योक्ति न होगी। **– सम्पादक**

वेदों के विषय में कुछ लोगों को यह भ्रान्ति है कि वेदों में धार्मिक ग्रन्थ होते हुए भी अश्लीलता का वर्णन है। इस विषय को समझने की पर्याप्त आवश्यकता है क्योंकि इस भ्रान्ति के कारण वेदों के प्रति साधारण जनमानस में आस्था एवं विश्वास प्रभावित होते है। पश्चिमी विद्वान ग्रिफ्फिथ महोदय ने इस विषय में ऋग्वेद 1/126 सूक्त के सात में पाँच मन्त्रों का भाष्य करने के पश्चात् अंतिम दो मन्त्रों का भाष्य नहीं किया हैं एवं परिशिष्ठ में इनका लेटिन भाषा में अनुवाद देकर इस विषय में टिप्पणी लिखी हैं कि इन्हें पढ़कर ऐसा लगता हैं कि मानो ये मंत्र किसी असभ्य उच्छृंखल, बेलगाम मनमौजी गडरिये के प्रेमगीत के अंश हो [i]।

ग्रिफ्फिथ महोदय अपने यजुर्वेद के भाष्य में भी 23 वें अध्याय के 19 वें मंत्र के पश्चात् सीधे 32 वें मंत्र के भाष्य पर आ जाते हैं। 20 वें मंत्र के विषय में उनकी टिप्पणी हैं कि यह और इसके अगले 9 मंत्र यूरोप की किसी भी सभ्य भाषा में वर्णन करने योग्य नहीं हैं। एवं 30 वें तथा 31 वें मंत्र का इन्हें पढ़े बिना कोई लाभ नहीं हैं [ii]।

विदेशी विद्वान वेद के जिन मन्त्रों में अश्लीलता का वर्णन करते हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं–

ऋग्वेद 1/126/6-7, ऋग्वेद 1/164/33 और ऋग्वेद 3/31/1, यजुर्वेद 23-22,23, अथर्ववेद 1//11/3-6, अथर्ववेद 4//4/3-8 , अथर्ववेद 6//72/ 1-3, अथर्ववेद 6/101/1-3, अथर्ववेद 6/138/4-5 अथर्ववेद 7/35/2-3, अथर्ववेद 7/90/ 3, अथर्ववेद 20/126/16-17, अथर्ववेद कांड 20 सूक्त 136 मंत्र 1-16

शंका 1- वेदों में अश्लीलता होने के कारण है?

समाधान- यह प्रश्न ही भ्रामक है क्योंकि वेदों में किसी भी प्रकार की अश्लीलता नहीं है। संस्कृत भाषा में यौगिक , रूढ़ि एवं योगरूढ़ तीन प्रकार के शब्द होते हैं। वैदिक काल में अनेक ऐसे शब्द प्रचलित थे जिन्हे सर्वदा श्लील (शालीन) माना जाता था और उनका संपर्क कुत्सित भावों से करने की प्रवृति न थी। ये शब्द है लिंग, शिश्न, योनि, गर्भ, रेत, मिथुन आदि। आजकल भी इन शब्दों को हम सामान्य भाव से ग्रहण करते हैं जैसे लिंग का प्रयोग पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग में किया जाता हैं। योनि का प्रयोग मनुष्य योनि एवं पशु योनि में भेद करने के लिए प्रयुक्त होता हैं, गर्भ शब्द का प्रयोग पृथ्वी के गर्भ एवं हिरण्यगर्भ के लिए प्रयुक्त होता हैं। इस प्रकार से अनेक शब्दों के उदाहरण लौकिक और वैदिक साहित्य से दिए जा सकते है जिनमें सभ्य व्यक्ति अश्लीलता नहीं देखते। श्लीलता एवं अश्लीलता में केवल मनोवृति का अंतर हैं। ऊपर में जिस प्रकार शब्दों के रूढ़ि अर्थो को ग्रहण किया गया हैं उसी प्रकार से कुछ स्थानों पर शब्दों के यौगिक अर्थो का भी ग्रहण होता हैं। जैसे माता की रज को सिर में धारण करो का तात्पर्य पग धूलि है न की माता के रजस्वला भाव से प्रार्थना की गई हैं। इस प्रकार से शब्दों के अर्थो के अनुकूल एवं उचित प्रयोग करने से ही तथ्य का सही भाव ज्ञात होता हैं अन्यथा यह केवल अश्लीलता रूपी भ्रान्ति को बढ़ावा देने के समान है। इस भ्रान्ति का एक कारण कुछ मन्त्रों में अर्थो का अस्वाभाविक एवं पक्षपातपूर्ण प्रयोग करके उनमें व्यभिचार अथवा अश्लीलता को दर्शाना है। एक कारण तथ्य को गलत परिपेक्ष्य में समझना है। एक उदाहरण लीजिये कि जिस प्रकार से चिकित्सा विज्ञान की पुस्तकों में मानव गुप्तेन्द्रियों के चित्र को देखकर कोई यह नहीं कहता कि यह अश्लीलता है क्योंकि उनका प्रयोजन शिक्षा है उसी प्रकार से वेद ईश्वरीय प्रदत ज्ञान पुस्तक है इसलिए उसमें जो जो बातें हैं वे शिक्षा देने के लिए लिखी गई हैं। इसलिए उनमें अश्लीलता को मानना भ्रान्ति है।

शंका 2 – अगर वेदों में अश्लीलता नहीं है तो फिर अनेक मन्त्रों में क्यों प्रतीत होता हैं?

समाधान- वेदों में अश्लीलता प्रतीत होने का प्रमुख कारण विनियोगकारों, अनुक्रमणिककारों, सायण,महीधर जैसे भाष्यकारों और उनका अनुसरण करने वाले पश्चिमी और कुछ भारतीय लेखक हैं। यदि स्वामी दयानंद और यास्काचार्य की पद्धति से शब्दों के सत्य अर्थ पर विचार कर मन्त्रों के तात्पर्य को समझा जाता तो वेद मन्त्रों में ज्ञान-विज्ञान के विरुद्ध कुछ भी न मिलता। कुछ उदाहरण से हम इस संख्या का निवारण करेंगे।

ऋग्वेद 1/126 के छठे और सातवें मंत्र का सायणाचार्य, स्कंदस्वामी आदि ने राजा भावयव्य और उनकी पत्नी रोमशा के मध्य संभोग की इच्छा को लेकर अत्यंत अश्लील संवाद का वर्णन मिलता है। पाठक सम्बंधित भाष्यकारों के भाष्य में देख सकते है। वही इसी मंत्र का अर्थ स्वामी दयानंद सुन्दर एवं शिक्षाप्रद रूप से इस प्रकार से करते है। स्वामी जी इस मंत्र में राजा जो उत्तम गुण सीखा सके और सब लोग जिसे ग्रहण करके उस पर सुगमता से चल सके के प्रजा के प्रति कर्त्तव्य का वर्णन करते हुए व्यवहारशील एवं प्रयत्नशील प्रजा को सैकड़ों प्रकार के भोज्य पदार्थ दे सकने वाली राजनी. ति करने की सलाह देते है। इससे अगले मंत्र में राजा की भांति उसकी पत्नी विदुषी और राजनीति में निपुण होने तथा प्रजा विशेष रूप से स्त्रियों का न्याय करने में राजा का सहयोगी बनने का सन्देश है।

ऋग्वेद 1/164/33 और ऋग्वेद 3/3/11 में प्रजापति का अपनी दुहिता (पुत्री) उषा और प्रकाश से सम्भोग की इच्छा करना बताया गया हैं जिसे रूद्र ने विफल कर दिया जिससे कि प्रजापति का वीर्य धरती पर गिर कर नाश हो गया। ऐसे अश्लील अर्थो को दिखाकर विधर्मी लोग वेदों में पिता-पुत्री के अनैतिक संबंधो पर आक्षेप करते हैं।

स्वामी दयानंद इन मंत्रो का निरुक्त एवं शतपथ का प्रमाण देते हुए अर्थ करते हैं कि प्रजापति कहते हैं सूर्य को और उसकी दो पुत्री उषा (प्रात काल में दिखने वाली लालिमा) और प्रकाश हैं। सभी लोकों को सुख देने के कारण सूर्य पिता के सामान है और मान्य का हेतु होने से पृथ्वी माता के समान है। जिस प्रकार दो सेना आमने सामने होती हैं उसी प्रकार सूर्य और पृथ्वी आमने सामने हैं और प्रजापति पिता सूर्य मेघ रूपी वीर्य से पृथ्वी माता पर गर्भ स्थापना करता है जिससे अनेक औषधियां आदि उत्पन्न होती हैं जिससे जगत का पालन होता है। यहाँ रूपक अलंकार है जिसके वास्तविक अर्थ को न समझ कर प्रजा. पति की अपनी पुत्रियों से अनैतिक सम्बन्ध की कहानी बना दी गई।

इन्द्र अहिल्या की कथा का उल्लेख ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रंथो में मिलता हैं जिसमें कहा गया हैं कि स्वर्ग का राजा इन्द्र गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या पर आसक्त होकर उससे सम्भोग कर बैठता हैं। उन दोनों को एकांत में गौतम ऋषि देख लेते हैं और शाप देकर इन्द्र को हजार नेत्रों वाला और अहिल्या को पत्थर में बदल देते है। अपनी गलती मानकर अहिल्या गौतम ऋषि से शाप की निवृति के लिया प्रार्थना करती है तो वे कहते है कि जब श्री राम अपने पैर तुमसे लगायेगे तब तुम शाप से मुक्त हो जायेगी। इस कथा का आलंकारिक अर्थ इस प्रकार है। यहाँ इन्द्र सूर्य हैं, अहिल्या रात्रि हैं और गौतम चंद्रमा है। चंद्रमा रूपी गौतम रात्रि अहिल्या के साथ मिलकर प्राणियों को सुख पहुचातें हैं। इन्द्र यानि सूर्य के प्रकाश से रात्रि निवृत हो जाती हैं अर्थात् गौतम और अहिल्या का सम्बन्ध समाप्त हो जाता है।

यजुर्वेद के 23/19-31 मन्त्रों में अश्वमेद्य यज्ञपरक अर्थो में महीधर के अश्लील अर्थ को देखकर अत्यंत अप्रीति होती है। इन मन्त्रों में यजमान राजा कि पत्नी द्वारा अश्व का लिंग पकड़ कर उसे योनि में डालने, पुरोहित द्वारा राजा की पत्नियों के संग अश्लील उपहास करने का अश्लील वर्णन हैं। पाठक सम्बंधित भाष्यकार के भाष्य में देख सकते है। स्वामी दयानंद ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में इन मन्त्रों का पवित्र अर्थ इस प्रकार से किया है। राजा प्रजा हम दोनों मिल के धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि के प्रचार करने में सदा प्रवृत रहें। किस प्रयोजन के लिए कि दोनों की अत्यंत सुखस्वरूप स्वर्गलोक में प्रिय आनंद की स्थिति के लिए, जिससे हम दोनों परस्पर तथा सब प्राणियों को सुख से परिपूर्ण कर देवें। जिस राज्य में मनुष्य लोग अच्छी प्रकार ईश्वर को जानते है, वही देश सुखयुक्त होता है। इससे राजा और प्रजा परस्पर सुख के लिए सद्गुणों के उपदेशक पुरुष की सदा सेवा करें और विद्या तथा बल को सदा बढ़ावें। कहाँ स्वामी दयानंद का उत्कृष्ट अर्थ और कहाँ महीधर का निकृष्ट और महाभ्रष्ट अर्थ!

ऋग्वेद 7/33/11 के आधार पर एक कथा प्रचलित कर दी गयी कि मित्र-वरुण का उर्वशी अप्सरा को देख कर वीर्य स्खलित हो गया। वह घड़े में जा गिरा जिससे वसिष्ठ ऋषि पैदा हुए। ऐसी अश्लील कथा से पढ़ने वाले की बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है।

इस मंत्र का उचित अर्थ इस प्रकार है। अथर्व वेद 5/19/15 के आधार पर मित्र और वरुण वर्षा के अधिपति यानि वायु माने गए है, ऋग्वेद 5/41/18 के अनुसार उर्वशी बिजली है और वशिष्ठ वर्षा का जल है। यानि जब आकाश में ठंडी- गर्म हवाओं (मित्र-वरुण) का मेल होता हैं तो आकाश में बिजली (उर्वशी) चमकती हैं और वर्षा (वसिष्ठ) की उत्पत्ति होती है। इस मंत्र का सत्य अर्थ पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। इस प्रकार से वेदों में जिन जिन मन्त्रों पर अश्लीलता का आक्षेप लगता है उसका कारण मन्त्रों के गलत अर्थ करना हैं। अधिक जानकारी के लिए स्वामी दयानंद[iii], विश्वनाथ वेदालंकार [iv], आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति [v], धर्मदेव विद्यामार्तंड [vi], स्वामी सत्यप्रकाश [vii]] डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री [viii] आदि विद्वतगण की रचना महत्वपूर्ण है जिनकी पर्याप्त सहायता इस लेख में ली गई हैं।

शंका 3- वेदों में यम यमी जोकि भाई बहन हैं उनके मध्य अश्लील संवाद होने से आप क्या समझते है?

समाधान- वेदों के विषय में अपने विचार प्रकट करते समय पाश्चात्य एवं अनेक भारतीय विद्वानों ने पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने के कारण वेदों के सत्य ज्ञान को प्रचारित करने के स्थान पर अनेक भ्रामक तथ्यों को प्रचारित करने में अपना सारा श्रम ...शेष पेज 6 पर

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा शिक्षक कार्यशाला सम्पन्न

देश के होनहारों के भविष्य निर्माण में शिक्षकों की अहम् भूमिका- महाशय धर्मपाल

''अगर कक्षा कि पढ़ाई में सबसे कमजोर बच्चे पर ध्यान दिया जाए तो निश्चित ही अन्य बच्चों की पढ़ाई का स्तर भी ठीक हो जाएगा।'' आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा आयोजित शिक्षकों की कार्यशालाओं की श्रृंखला में आयोजित कार्यशाला में शिक्षकों को संबोधित करते हुए प्रसिद्ध शिक्षाविद् और आर्य विद्या परिषद् के प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी ने उपस्थित शिक्षकों से ऐसी अपेक्षा रखी। 19 मई, मंगलवार को, एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल, द्वारका में आयोजित इस कार्यशाला में एम.डी.एच. ग्रुप के विभिन्न विद्यालयों के लगभग 100 शिक्षकों ने भाग लिया। इस अवसर पर एम.डी.एच. ग्रुप के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने स्वयं उपस्थित रहकर सभी का उत्साह वर्धन किया । कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन व मंत्रोच्चारण से हुआ। विद्यालय की अध्यापिकाओं ने गीत- 'मानवता के मन मंदिर मे, ज्ञान का दीप जला दो, करुणा निधान भगवान मेरे भारत को स्वर्ग बना दो'' किया। तत्पश्चात्, अपने वक्तव्य में श्री रैली जी ने शिक्षकों को उनके व्यक्तित्त्व विकास के विभिन्न पहलुओं पर मार्गदर्शन करते हुए उन्हें ईश्वर में विश्वास रखना, वेदों की आज्ञाओं के आधार पर कार्य करना, अपने नियत दायित्त्वों को पूरी निष्ठा से निभाना, विद्यार्थियों विभिन्न महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा मिल सके, ऐसी व्यवस्था करवाना, समय का पालन करना, किसी की आलोचना न करना, ईश्वर की बनाई सृष्टि से प्यार करना, दूसरों के लिए सदैव प्रसन्नता की रचना करना, स्वयं की गलती कि स्वीकार करके उसे सुधारना, हर कार्य को, हर व्यवस्था में खुशी-खुशी करना, के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर श्री आर. एन. राय, श्री गोविन्द राम अग्रवाल, जी राजेन्द्र कुमार जी, श्रीमती नन्दिनी विदोलिया, श्रीमती मौरिस, व श्रीमती शकुन्तला भी उपस्थित थी। महाशय धर्मपाल जी ने सभी को प्रेरणा देते हुए कहा कि अपनी जीवन यात्रा में पूरी निष्ठा व लगन से सभी को कार्य करने चाहिए।

श्री आर. एन. राय-, (प्रबंधक एम. डी. एच. इन्टरनेशनल स्कूल द्वारका) ने अध्यापिकाओं को महान शिक्षक बनने का उद्देश्य रखने के लिए और सभी को विद्यालय में व कक्षा में बच्चों की उन्नति व प्रगति के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए प्रेरित किया।

श्रीमती मौरिस (प्रधानाचार्या, एम.डी. एच. इन्टरनेशनल जनकपुरी) विद्यालय में बहुत ही कार्यशालाएं आयोजित होती है, लेकिन आर्य विद्या परिषद् द्वारा आयोजित यह कार्यशाला हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए बहुत सी उपयोगी रहेगी। निश्चित रूप से, अब सभी अध्यापिकाएँ अपने दायित्वों को पूरी ईमानदारी व निष्ठा से पूरा करेगी।

श्रीमती शकुन्तला- प्रधानाचार्या- महाशय धर्मपाल विद्या मंदिर, सुभाष नगर) इस कार्यशाला में बड़े सरल ढ़ंग से ईश्वर के नाम, उसका अस्तित्व, और पूर्णत: विश्वास रखने का जो महत्व श्री रैली जी ने समझााया, वह हमेशा याद रहेगा।

श्री राजेन्द्र कुमार जी (एम.डी.एच. ग्रुप) सीखना एक सतत प्रक्रिया है। सभी उपस्थित अध्यापिकाएं बेशक ज्ञानवान है और अपने प्रयासों से बच्चों की तरक्की के लिए हर संभव कार्य करती है। लेकिन इस प्रकार की कार्यशाला में अनुभवी शिक्षाविद का मार्गदर्शन उनके कार्यो को प्रगति देगा।

श्री गोविन्द राम अग्रवाल - (प्रबंधक, एम.डी.एच. इंटरनेशनल स्कूल, जनकपुरी) -इस कार्यशाला में श्री रैली जी का 74 वर्ष की आयु में निरंतर दो-दो घंटे के दो सत्रों में अपने जीवन के निजी अनुभवों के आधार पर शिक्षकों का मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देना वास्तव में सराहनीय है। हम हृदय से श्री रैली का आभार मानते है कि इतने सरल ढ़ंग से इन्होंने इतने गूढ़ विषयों को तर्को के माध्यम से सभी को समझाया, जिनको सभी अपने जीवन में निश्चित रूप से प्रयोग ला सकेगे।

श्रीमती नन्दिनी बिदोलिया- (प्रधानाचार्या, एम. डी. एच. इन्टरनेशनल स्कूल द्वारका)- एक शिक्षक समाज का आईना होता है और इसी कारण आवश्यक हो जाता है कि उसका व्यक्तित्त्व उच्च आदर्शो से युक्त हो। आज की इस कार्यशाला में आकर्षक व्यक्तित्त्व पाने के अनोखे एवं प्रभावशाली तरीके जानकर सभी शिक्षक अपने आप को और भी सक्षम व उत्साही महसूस करने लगे है। ऐसी कार्यशाला के माध्यम से सभी शिक्षकों को देश के होनहारों का भविष्य उज्ज्वल बनाने में निश्चित ही सहायता मिलेगी। **-संयोजिका**

34वें वनवासी वैचारिक क्रांति शिविर का उद्घाटन समारोह

अखिल भारतीय दयानन्द सेवा आश्रम संघ के तत्त्वावधान में 34वां वनवासी वैचारिक क्रांति शिविर अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. के निर्देशन एवं आशीर्वाद से उत्साह तथा उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री श्री राजीव आर्य जी भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश के कोषाध्यक्ष श्री श्याम लाल गर्ग जी, निगम पार्षद श्री देवराज अरोड़ा जी, श्री शशि दत्त जेतली जी, श्री रमेश अग्रवाल जी, श्री अनिल मंगला जी एवं उत्तर पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री सुरेश आर्य जी की गरिमामयी उपस्थिति में मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री सतेन्द्र गैल जी के कर कमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर समारोह का शुभारम्भ हुआ।

समारोह में आर्य गुरुकुल, रानी बाग के बालकों द्वारा वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलकियां प्रस्तुत की गयीं। श्री रमेश अग्रवाल जी एवं अनिल मंगला जी द्वारा शिविर हेतु सहयोग राशि श्री जोगेन्द्र खट्टर जी को दी गयी। श्री देवराज अरोड़ा जी एवं श्री चमन लाल शर्मा जी ने न केवल शिविर के दौरान बल्कि आगे भी दयानन्द सेवाश्रम को हर सम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया। संस्था के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर ने उपस्थित स्वास्थ्य मंत्री को जिनके पास पी.डब्लू.डी मंत्रालय का भार भी है से प्रार्थना की कि माता प्रेम लता जी के नाम पर आस-पास के क्षेत्र में किसी सड़क अथवा पार्क का नाम रखा जाए एवं साथ ही प्रार्थना की कि हमारे मण्डल के बच्चों के लिए महावीर अस्पताल में विशेष सुविधाएं दी जाएं। जिसे आदरणीय मंत्री जी ने सहर्ष स्वीकार करते हुए आने वाले समय में दोनों मांगों को पूरा करने का आश्वासन दिया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने संगठन को मजबूत करने की अपील करते हुए उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं का मनोबल बढ़ाया एवं हर सम्भव सहायता करने का आश्वासन दिया।

एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल में गुरुकुल के छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क शिक्षा देने के लिए श्री राजीव आर्य जी का एवं एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल के समस्त कार्यकत्ताओं का श्री जोगेंद्र खट्टर जी ने धन्यवाद किया। श्री राजीव आर्य जी ने इसे अपना-अपना दायित्व एवं कर्त्तव्य निभाते हुए माता प्रेम लता जी एवं दयानन्द सेवाश्रम का धन्यवाद किया कि हमें इस कार्य को करने का अवसर प्रदान किया। श्री विट्टू टिक्की वाले श्री सती राम जी ने शिविर के लिए सहयोग करते हुए सदैव सहयोग करने का आश्वासन दिया।

शिविर मुख्य आयोजक आचार्य श्री दया सागर जी एवं सह संयोजक श्री जीववर्धन शास्त्री जी ने बहुत सुन्दर व्यवस्था शिविरार्थियों के लिए बनाई हुई थी।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आर्य समाज रानी बाग के कार्यकर्त्ता श्रीमती सुषमा चावला श्री अशोक कालरा, श्री महेश आर्य जी, श्री यज्ञदत्त आर्य, माता श्रीमती अंजना चावला जी ने सुन्दर व्यवस्था बनाने में सम्पूर्ण सहयोग दिया। इस वैचारिक क्रांति शिविर में आसाम, नागालैण्ड, त्रिपुरा, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, इत्यादि राज्यों से 250 शिविरार्थियों ने भाग लिया। अन्त में माता जी के सुपुत्र श्री विनोद खन्ना जी ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं श्री धर्मपाल गुप्ता जी ने आए हुए सभी अतिथियों का धन्यवाद किया।

अखिल भारतीय दयानन्द सेवा श्रम संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय महाशय धर्मपाल जी एम.डी.एच. ने सभी शिविरार्थियों के लिए आशीर्वाद एवं शुभ संदेश भेजा और कहा कि -''इस

...शेष पेज 5 पर

पूर्वोत्तर क्षेत्रों में अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के कार्यों का निरीक्षण

शिक्षा के माध्यम से समाज सेवा करना सर्वोत्तम कर्म है : अमित शाह

बालकों को शिक्षा के साथ संस्कार देना ही दयानंद सेवा श्रम संघ का उद्देश्य: विनय आर्य

अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम संघ नई दिल्ली का एक प्रतिनिधि मंडल एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री श्री विनय आर्य जी एवं एमडीएच परिवार के श्री प्रेम अरोड़ा जी, श्री अनिल अरोड़ा जी, कलकत्ता से श्री दीन दयाल गुप्त जी एवं रांची से श्री शत्रुघ्न लाल गुप्ता जी ने दयानंद सेवा आश्रम संघ द्वारा पूर्वोत्तर राज्यों में चलाए जा रहे प्रकल्पों का दौरा किया। अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम संघ के प्रतिनिधि मंडल तथा दिल्ली से आए सार्वदेशिक सभा के अधिकारी एवं एमडीएच परिवार का धनश्री में पहुंचते ही स्थानीय अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने भव्य स्वागत किया। इसके पश्चात् दिल्ली से पधारे प्रतिनिधि मंडल ने महाशय धर्मपाल जी की सहायता के द्वारा बनाए जा रहे विद्यालय, महाशय धर्मपाल (एमडीएच) दयानंद आर्य विद्या निकेतन धनश्री आसाम के निर्माण कार्यों का जायजा लिया। श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं अनिल अरोड़ा जी ने धनश्री, के एम.डी.एच. डी.ए.वी.एन. विद्यालय की समीक्षा की एवं विद्यालय का उद्घाटन अक्टूबर में करने की सलाह दी तथा महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी द्वारा पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया गया। धनश्री के भवन निर्माण में आर्कीटेक्ट, ठेकेदार एवं इंजीनियर, डिजाईनर (आंतरिक सज्जा) करने वाले ठेकेदारों से मिलकर जानकारी प्राप्त की एवं वहां चल रहे विद्यालय की श्री दीनदयाल गुप्त और श्री शत्रुघ्न लाल गुप्ता जी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा कि संघ का यह प्रकल्प इस क्षेत्र में शिक्षा का पर्याय बन कर अपना एक कीर्तिमान स्थापित करेगा, यह कार्य वास्तव में प्रशंसनीय है।

बोकाजान स्थित आश्रम में प्रातः काल में वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात् दयानंद सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर राज्यों की अंतरंग बैठक श्री विनय आर्य जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सर्व सम्मति से श्री दीन दयाल गुप्त जी प्रधान निर्वाचित हुए एवं उनको अन्य मंत्री मंडल चुनने का अधिकार सर्व सम्मति से दिया गया जिसमें उन्होंने श्री शुत्रघ्न लाल गुप्ता जी को उप प्रधान के पद पर सुशोभित किया। श्री लीला बोरा जी को पूर्व की भांति सचिव एवं श्री जीव वर्धन शास्त्री जी को अंतरंग सदस्य के रूप में जिम्मेदारी सौंपी। श्री दीनदयाल गुप्त जी ने बोकाजान में बालकों के छात्रावास के लिए भवन निर्माण पूरा होने पर उसका उद्घाटन किया जो कि स्वयं उनके सहयोग से बनाया गया था। श्री दीन दयाल गुप्त जी द्वारा शिक्षा एवं वैदिकता के प्रचार-प्रसार रूपी यज्ञ में लगाए गए पवित्र धन से अनेकों बालकों को अपने स्वप्नों को साकार करने का सौभाग्य तो प्राप्त होगा ही साथ ही वेद ज्ञान की धारा का प्रचार-प्रसार भी उस क्षेत्र में होगा। इसके बाद बोकाजान आश्रम की चारदीवारी का शिलान्यास आदरणीय श्री दीन दयाल गुप्त जी, श्री शत्रुघ्न लाल गुप्ता जी, श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं श्री अनिल अरोड़ा जी (एम.डी.एच. परिवार) की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम संघ के महामंत्री जी ने जानकारी देते हुए कहा कि आज पूर्वोत्तर राज्यों में शैक्षिक क्षेत्रों में की गई क्रांति की सूत्रधार जहां स्वर्गीया माता प्रेम लता जी रही हैं वहीं वर्तमान समय में इस दिशा में विशेष योगदान अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम संघ के प्रधान महाशय धर्मपाल जी का है, जिनकी दूरदर्शिता, कार्य कुशलता एवं अथक प्रयासों के द्वारा ही यहां पर शैक्षिक प्रकल्प प्रगति की ओर अग्रसर हैं। महाशय धर्मपाल जी की कर्मठता के फलस्वरूप दयानंद सेवाश्रम संघ आज पूर्वोत्तर राज्यों में एक कीर्तिमान स्थापित कर रहा है तथा माता श्रीमती प्रेमलता जी द्वारा किए गए कार्यों को गति प्रदान कर रहे हैं। देश के दूर-दराज के आदिवासी क्षेत्रों में ऐसे शैक्षिक प्रकल्पों के द्वारा शिक्षा सर्व सुलभ बनाने हेतु यह महाप्रयास आदरणीय महाशय धर्मपाल जी (एम. डी.एच.) की अध्यक्षता में माता प्रेमलता जी के देहांत के पश्चात् भी उसी गति से बढ़ रहा है जिससे उन पूर्वोत्तर क्षेत्रों में शिक्षा की ज्योत जन सामान्य को ज्योतित कर रही है। दीमापुर आश्रम में पहुंचने पर क्षेत्रीय पदाधिकारियों ने दिल्ली से आए प्रतिनिधि मंडल का हर्ष पूर्वक स्वागत और सम्मान किया। पूरे प्रतिनिधिमंत्रि मंडल ने दीमापुर के विद्यालय की समीक्षा की तथा श्री शत्रुघ्न लाल गुप्त जी ने नया भवन बनवाने का संकल्प लिया। हमारे स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री संतोष आर्य जी एवं शिरोमणि श्री रमा शंकर जी के प्रयास से प्रतिनिधि मंडल ने श्री अमित शाह राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा एवं राष्ट्रीय महासचिव श्री रामलाल जी से मिलकर पूर्वोत्तर राज्यों में चल रहे दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रकल्पों की जानकारी दी जिसको उन्होंने बहुत सराहा और कहा कि शिक्षा के माध्यम से समाज की सेवा करना सर्वोत्तम कर्म है, यह एक नहीं दो नहीं हजारों लाखों घरों में ज्ञान की रोशनी प्रदान करेगा। वैदिक रीति द्वारा माननीय राजनेताओं का स्वागत एवं सम्मान किया, साथ ही उन्हें महर्षि दयानंद सरस्वती का चित्र भेंट किया गया। सभी प्रकल्पों का विधिवत् दौरा करते हुए सभी संस्थाओं की उन्नति एवं प्रगति का जायजा लेते हुए तथा विचार-विमर्श कर संस्थाओं के विकास की रूपरेखा निर्धारित करते हुए अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अधिकारियों का प्रतिनिधि मंडल दिल्ली लौट आया। दिल्ली पहुंचकर समस्त अधिकारियों ने एक विशेष बैठक में पूर्वोत्तर राज्यों के दौरे की समीक्षा करते हुए प्रकल्पों की उन्नति और उत्थान के कार्यों पर विस्तृत चर्चा करते हुए, उनके क्रियान्वयन की रूप रेखा को विधिवत लागू करने का निर्णय लिया। **-जोगेंदर खट्टर, महामंत्री**

पृष्ठ 1 का शेष

34वें वनवासी ...

शिविर में भाग ले रहे बालक ऐसे क्षेत्रों से आए हैं, जो आर्थिक रूप से पिछड़ा हुआ है। आज ये बालक शिक्षित और संस्कारित होकर सुंदर भविष्य का निर्माण ही नहीं बल्कि आर्य समाज और राष्ट्र के हित में एक मिशन के रूप में कार्य करेंगे तथा समाज को एक नई दिशा प्रदान करेंगे। ऐसी भावना के साथ समस्त शिविरार्थियों को शुभाशीष''समारोह में उपस्थित आर्य समाज सैनिक विहार, सरस्वती विहार, पुष्पांजलि एवं रोहिणी सैक्टर-7, 4 एवं 5 से आए हुए सभी पदाधिकारियों का श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने आभार व्यक्त किया।

पृष्ठ 3 का शेष

क्या वेदों में ...

व्यर्थ कर दिया। यम यमी सूक्त के विषय में इन्ही तथाकथित विद्वानों की मान्यताये इसी भ्रामक प्रचार का नतीजा हैं। दरअसल विकासवाद की विचारधारा को सिद्ध करने के प्रयासों ने इन लेखकों को यह कहने पर मजबूर किया कि आदि काल में मानव अत्यन्य अशिक्षित एवं जंगली था। विवाह सम्बन्ध, परिवार, रिश्ते नाते आदि का प्रचलन बाद के काल में हुआ।

श्रीपाद अमृत डांगे लिखते हैं – "इस प्रकार के गुणों में परस्पर भिन्न नातों तथा स्त्री पुरुष संबंधों की जानकारी न होना स्वाभाविक ही था। परन्तु इस प्रकार का अनियंत्रित सम्बन्ध संतति विकसन के लिए हानिकारक होने के कारण सर्वप्रथम माता-पिता एवं उनके बाल बच्चों का बीच सम्भोग पर नियंत्रण उपस्थित किया गया और इस प्रकार कुटुंब व्यवस्था की नींव रखी गई। यहाँ विवाह की व्यवस्था कुटुम्भ के अनुसार होनी थी, अर्थात् समस्त दादा दादी परस्पर एक दूसरे के पति पत्नी हो सकते थे। उसी प्रकार उनके लड़के लड़कियां अर्थात् समस्त माता पिता एक दूसरे के पति पत्नी हो सकते थे । सगे व चचेरे भाई-बहिन सब सुविधानुसार एक दूसरे के पति पत्नी हो सकते थे। आगे चलकर भाई और बहिन के बीच निषेध उत्पन्न किया गया। परन्तु उस नवीन सम्बन्ध का विकास बहुत ही मंदगति से हुआ और उसमें अड़चन भी बहुत हुई, क्योंकि समान वय के स्त्री पुरुषों के बीच यह एक अपरिचित सम्बन्ध था। एक ही माँ के पेट से उत्पन्न हुई सगी बहिन से प्रारंभ कर इस सम्बन्ध का धीरे धीरे विकास किया गया। परन्तु इसमें कितनी कठिनाई हुई होगी, इसकी कल्पना ऋग्वेद के यम-यमी सूक्त से स्पष्ट हो जाती हैं। यम की बहिन यमी अपने भाई से प्रेम एवं संतति की याचना करती हैं। परन्तु यम यह कहते हुए उसके प्रस्ताव को अस्वीकृत कर देता हैं कि देवताओं के श्रेष्ठ पहरेदार वरुण देख लेंगे एवं क्रुद्ध हो जायेंगे। इसके विपरीत यमी कहती हैं कि वे इसके लिए अपना आशीर्वाद देंगे। इस संवाद का अंत कैसे हुआ, यह प्रसंग तो ऋग्वेद में नहीं हैं, परन्तु यदि यह मान लिया जाये की अंत में यम ने यह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया तो भी यह स्पष्ट हैं की प्राचीन परिपाटी को तोड़ने में कितनी कठिनाई का अनुभव हुआ होगा [ix]।

यम यमी सूक्त ऋग्वेद [x] और अथर्ववेद [xi] में आता है। डांगे विदेशी विद्वानों की सोच का ही अनुसरण करते दिख रहे हैं। यम यमी सूक्त का मूल भाव भाई-बहन के संवाद के माध्यम से शिक्षा देना है। यम और यमी दिन और रात हैं, दोनों जड़ है। इन्ही दोनों जड़ों को भाई बहन मानकर वेद ने एक धर्म विशेष का उपदेश किया है। अलंकार के रूपक से दोनों में बातचीत हैं। यमी यम से कहती हैं कि आप मेरे साथ विवाह कीजिये पर यम कहता हैं कि- बहिन के साथ कुत्सित व्यवहार करने से पाप होता हैं। पुराकाल में कभी भाई बहिन का विवाह नहीं हुआ, इसलिए तू दुसरे पुरुष को पति बना। परमात्मा ने जड़ प्रति का उदाहरण देकर लोगों को यह सूचित करा दिया हैं कि एक जड़ स्त्री के कहने पर भी पाप के डर से परम्परा की शिक्षा से प्रेरित होकर एक जड़ पुरुष जब इस प्रकार के पाप कर्म को करने से इंकार करता हैं, तब चेतन ज्ञानवान मनुष्य को भी चाहिए कि वह भी इस प्रकार का कर्म कभी न करे [xii]।

वेदों में बहिन भाई के व्यभिचार का कितना कठोर दंड हैं तो श्रीपाद डांगे का यह कथन कि यम यमी सूक्त में बहन भाई के व्यभिचार का वर्णन हैं अज्ञानता मात्र हैं। देखें-

ऋग्वेद [xiii], और अथर्ववेद [xiv], में आता हैं जो तेरा भाई तेरा पति होकर जार कर्म करता हैं और तेरी संतान को मरता हैं, उसका हम नाश करते हैं।

अथर्ववेद [xv] में आता हैं यदि तुझे सोते समय (स्वपन में) तेरा भाई अथवा तेरा पिता भूलकर भी प्राप्त हो तो वे दोनों गुप्त पापी औषधि प्रयोग से नपुंसक करके मार डाले जाएँ।

आगे श्रीपाद डांगे का यह कथन कि 'विवाह, रिश्ते आदि से मनुष्य जाति वैदिक काल में अनभिज्ञ थी' भी अज्ञानता मात्र है। ऋग्वेद के विवाह सूक्त [xvi] अथर्ववेद [xvii] में पाणिग्रहण अर्थात् विवाह विधि, वैवाहिक प्रतिज्ञाएँ, पति पत्नी सम्बन्ध, योग्य संतान का निर्माण, दाम्पत्य जीवन, गृह प्रबंध एवं गृहस्थ धर्म का स्वरुप देखने को मिलता हैं, जो विश्व की किसी अन्य सभ्यता में अन्यत्र ही मिले।

वैदिक काल के आर्यो के गृहस्थ विज्ञान की विशेषता को जानकार श्रीमती एनी बेसंत ने लिखा हैं- भूमंडल के किसी भी देश में, संसार की किसी भी जाति में, किसी भी धर्म में विवाह का महत्त्व ऐसा गंभीर एवं ऐसा पवित्र नहीं हैं, जैसे प्राचीन आर्ष ग्रंथों में पाया जाता हैं [xviii]। यम यमी सूक्त एक आदर्श को स्थापित करने का सन्देश हैं नकि भाई-बहन के मध्य अनैतिक सम्बन्ध का विवरण हैं।

शंका 4- क्या अथर्ववेद में वर्णित गर्भाधान, प्रसव विद्या आदि = की प्रक्रिया का वर्णन अश्लील नहीं है?

समाधान- सभी मनुष्यों के कल्याणार्थ ईश्वर द्वारा वेदों में गृहस्थाश्रम में पालन हेतु संतान उत्पत्ति हेतु अथर्ववेद के 14 वें कांड के 2 सूक्त के 31,32, 38 और 39 मन्त्रों में गर्भाधान की प्रक्रिया का वर्णन है। यह वर्णन ठीक इस प्रकार से है जैसा चिकित्सा विज्ञान के पुस्तकों में वर्णित होता है एवं उसे कोई भी अश्लील नहीं मानता। इसी प्रकार से अथर्ववेद के पहले कांड 11 वें सूक्त में प्रसव विद्या का वर्णन लाभार्थ वर्णित है। ग्रिफ्फिथ महोदय इन मन्त्रों को अश्लील मानते हुए अवांछनीय टिप्पणी लिख देते है [xix]। अब कोई ग्रिफ्फिथ साहिब से पूछे कि चिकित्सा विज्ञान में जब अध्यापक छात्रों को प्रसव प्रक्रिया पढ़ाते है तो क्या योनि, गर्भ, लिंग आदि शब्द अश्लील प्रतीत होते हैं। उत्तर स्पष्ट है कदापि नहीं। अंतर केवल मनोवृति का है। इन मन्त्रों में कहीं भी अनाचार, व्यभिचार आदि का वर्णन नहीं हैं यही अंतर इन्हें अश्लील से श्लील बनता हैं।

[i] I subjoin a Latin version of the two stanzas omitted in my translation- They are in a different metre from the rest of the Hymn having no apparent connection with what precedes and look like a fragment of a liberal shepherd*s love song- Appendi 1 The Hymns of the Rigveda 1889 by Ralph T-H-Griffith-

[ii] This and the following nine stanzas are not reproducible even in the semi & obscurity of a learned European language; and stanzas 30 31 would be unintelligible without them-p-231 White Yajurveda by Ralph T-H-Griffith-

[iii] ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, यजुर्वेदभाष्य ऋग्वेदभाष्य [iv] अथर्ववेद भाष्य प्रकाशक- रामलाल कपूर ट्रस्ट [v] वेद और उसकी वैज्ञानिकता भारतीय मनीषा के परिपेक्ष्य में- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय [vi] वेदों का यथार्थ स्वरुप- समर्पण शोध संस्थान [vii] वेदों पर अश्लीलता का व्यर्थ आक्षेप [viii] वेद और वेदार्थ- श्री घूडमल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास [ix] Origin of Marriage by Dange [x] ऋग्वेद 10/10 [xi] अथर्ववेद 18/1 [xii] ऋग्वेद 10/10/10 [xiii] ऋग्वेद 10/162/5 [xiv] अथर्ववेद 20/16/15 [xv] अथर्ववेद 8/6/7 [xvi] ऋग्वेद 10/85 [xvii] अथर्ववेद 14/1, 7/37 एवं 7/38 सूक्त **[xviii] Nowhere in the whole world, nowhere in any religion] a nobler, a more beautiful, a more perfect ideal of marriage than you can find in the early writings of Hindus & Annie Besant**

[xix] The details given in the stanza 3 & 6 are strictly obstetric and not presentable in English-

Read this article online at this link http://vedictruth-blogspot-in/2015/04/blog & post_26-html

डॉ. विवेक आर्य

नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ आर्यजनों से अपील

सभा का प्रयास आवासीय सेल्टर बनाने का रहेगा
एक सेल्टर बनाने की अनुमानित लागत 50 हजार रुपए होगी
सारी जानकारी अगले अंक में देने का प्रयास रहेगा

आर्यजनों से विनम्र निवेदन है कि **"नेपाल भूकम्प राहत कोष हेतु सहयोग देवें"** सार्वदेशिक सभा कार्यालय नेपाल केन्द्रीय आर्यसमाज, **टंक प्रसाद मार्ग, बालेश्वर हाईट्स, काठमाण्डु (नेपाल)** संपर्क करें मो. 00977-9860481314 अथवा (1) श्री कमलकांत आत्रेय 00977-9841677706 (2) श्री माधव प्रसाद 00977-9841303440 (3) श्री तारानाथ मैनाली 00977-9851077613 अधिकाधिक मात्रा में खाद्य सामग्री, दूध पाउडर, नए कपड़े, धोती, तौलिए तथा अन्य जरूरतों के सामान के साथ-साथ आर्थिक सहयोग राशि भेजें।

कृपया अपनी सहयोग राशि चैक/बैंक ड्राफ्ट/नकद 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम कैम्प कार्यालय- **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के** पते पर भेजें।

दानी सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि निम्न बैंक खाते में सीधे भी जमा करा सकते हैं-

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' - खाता सं. 09481000000276, पंजाब एंड सिंध बैंक शाखा कालकाजी, नई दिल्ली, IFSC - PSIB 0020948 MICR - 110023121

यदि आप अपनी **दान राशि पर आयकर छूट** चाहते हैं तो कृपया अपनी दानराशि **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम भेजें अथवा निम्न बैंक खाते में जमा कराएं। दिल्ली सभा को दिया गया समस्त दान आयकर की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

दानी सज्जन/संस्थाएं अपनी दान राशि निम्न बैंक खाते में सीधे भी जमा करा सकते हैं-

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010008984897, एक्सिस बैंक शाखा करोलबाग, नई दिल्ली, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

कृपया अपनी दान राशि जमा करने के तत्काल बाद नम्बर 9540040339 पर सूचित करें तथा **aryasabha@yahoo.com** पर डिपॉजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके। **दानी महानुभावों, आर्यसमाजों, व्यापारिक एवं शैक्षिणिक संस्थाओं द्वारा दी जाने वाली राशि तथा राहत सामग्री की सूची सभा के साप्ताहिक पत्र "आर्य सन्देश" में निरन्तर प्रकाशित की जाएगी।**

विशेष:- सभी दान-दाताओं एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि दिल्ली सभा को संपर्क करके ही सामान भेजें।

सभा कार्यालय नम्बर 011-23360150 (समय : 12.00 बजे से सायं 8.00 बजे)

वेद प्रचार एवं महर्षि दयानंद के संदेशों को प्रसारित करने के लिए पुस्तक मेला

पूर्वोत्तर राज्यों में वेद प्रचार एवं महर्षि दयानंद सरस्वती के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाने हेतु दिनांक 8 से 16 जून 2015 तक स्टेट सेंट्रल लाईब्रेरी,शिलांग, मेघालय में विशाल पुस्तक मेले का आयोजन किया जा रहा है। यह पुस्तक मेला नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से आयोजित किया जा रहा है जिसके अन्तर्गत दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज शिलांग के संयुक्त प्रयासों से वेद प्रचार एवं महर्षि दयानंद के संदेशों को पूर्वोत्तर राज्यों में प्रसारित करने का प्रसास किया जा रहा है।

मेले की विशेषता : पुस्तक मेले में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए अंग्रेजी भाषा में वैदिक साहित्य उपलब्ध होगा।

स्थान : स्टेट सेंट्रललाईब्रेरी, शिलांग, मेघालय

संपर्क सूत्र : श्री शिव प्रसाद शर्मा. मो. 09436110517

''शत हस्त समाहर सहस्र हस्त सं किर'' - सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

आर्यजन दिल खोलकर दान दें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर सभा को नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ प्राप्त दान सूची

गतांक से आगे :-

आर्य समाज किरण गार्डन, नई दिल्ली द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

71. तेजवीर सिंह त्यागी 1100/-
72. मां. तारीफ सिंह 1100/-
73. वीना त्यागी 500/-
74. जे.एन. प्रसाद 1200/-
75. श्रीमती कृष्णा मिगलानी 1100/-
76. श्रीमती नीरजा भास्कर 1100/-
77. श्री आर. के. मिगलानी 1100/-
78. आर्य संस्कार केन्द्र नवादा विस्तार के बच्चे- हितेष, मिगलानी, मनन, मिगलानी, नीतू, अर्चना द्वारा एकत्र धनराशि 8300/-

आर्य समाज पंखा रोड़, जनकपुरी, सी -3 द्वारा एकत्रित की गई दान राशि

79. एच.एल. मल्होत्रा 10000/-
80. रैनबो इग्लिश स्कूल 5100/-
81. डी.के. मित्तल 5100/-
82. सोमदत्त महाजन व पुत्र संदीप-संजय, आर्य व विकास महाजन 3000/-
83. उमा मोंगा 2100/-
84. पवन 2100/-
85. डॉ. कृष्णा आरोड़ा व पी. एन. कामरा 2000/-
86. संतोष मदान 2100 /-
87. शिव कुमार मदान व प्रेमलता मदान 1100/-
88. मा. चैतन्य पोत्र ओम प्रकाश गोयल 1100/-
89. वेदान्त मदान 1100/-
90. संतोष डंग 1100/-
91. सत्यदेव खरबन्दा 1100/-
92. चड्ढा जी 1100/-
93. सावित्री व जनकराज महाजन 1100/-
94. कमल जी 1100/-
95. विनोद जी 1100/-
96. विक्की जी 1200/-
97. एम. पी. साहनी 1000/-
98. एच. डी. कालड़ा 1000/-
99. संजय जी 1000/-
100. दीपक जी 1000/-
101. दीपक डावर सुपुत्र सविता अरोड़ा 1000/-
102. आदर्श सरीन 1000/-
103. अनूप महाजन 1000/-
104. भूप सिंह सैनी 1000/-
105. के. एन. चोपड़ा 501/-
106. विजय कुमार गुलाटी 500/-
107. अजय तनेजा 500/-
108. रमा गुप्ता 500/-
109. ओम प्रकाश गुलाटी 500/-
110. सुरेश राजपूत 500/-
111. ज्ञान गुलाटी 500/-
112. ओ. पी. मदान 500/-
113. जय देव गाबा 500/-
114. रजत वर्मा 500/-
115. वाई. के. पाठक 500/-
116. गोपाल कृष्ण सेठी 500/-
117. अमित शर्मा 500/-
118. माया देवी 500/-
119. इन्दु रस्तोगी 500/-
120. निर्मला गुलाटी 500/-
121. एल.डी. सचदेवा 500/-
122. विमला दुग्गल 500/-
123. कमला चढ्ढा 500/-
124. ओमपाल 500/-
125. विद्या विनोद पुष्प 500/-
126. एस.पी. मदान 500/-
127. पुष्पा नासा 500/-
128. कमलेश कालड़ा 500/-
129. राजेश गुप्ता 500/-
130. ऊषा अरोरा 500/-
131. अजय सुखीजा 500/-
132. प्रहलाद मुंशी 500/-
133. वी. के. महाजन 500/-
134. के. के. महाजन 500/-
135. राजेन्द्र सिंह 500/-
136. पी. के अग्रवाल 500/-
137. चन्द्र कान्ता 500/-
138. प्रतिभा कटारिया व कोणार्क कटारिया 500/-
139. अनन्या पोपली 500/-
140. वन्दना 500/-
141. विमला जनवेजा 500/-
142. एकांक्ष जनवेजा 500/-
143. उमा शंकर 200/-
144. सरला सुखीजा 200/-
145. सूरजभान डागर 100/-
146. मुकेश आर्य 500/-
147. रतन सिंह 500/-
148. उर्मिला पोपली 500/-
149. नीना वर्मा 250/-
150. फुलकोर 250/-
151. हीरा लाल सेठ 250/-
152. सीमा बजाज 500/-

-क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य संदेश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। -महामंत्री

अर्जुनदेव चढ्डा को महाशय धर्मपाल ने दिया आशीर्वाद

आर्य समाज के 93 वर्षीय शिरोमणि महाशय धर्मपाल आर्य चैयरमेन एम.डी.एच. ने कोटा के वरिष्ठ समा. जसेवी व आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा को समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर आशीर्वाद दिया है। अर्जुनदेव चड्ढा ने दिल्ली स्थित महाशय धर्मपाल जी के कार्यालय पर रविवार को उनसे मुलाकात की तब महाशय जी ने कहा कि '' आप भाग्यवान हैं जो समाजसेवा कर रहे हैं। जिस मनुष्य पर परमात्मा की कृपा होती है वही नि:स्वार्थ समाजसेवा करता है। मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। आप पर भगवान की असीम कृपा है जो आप समाजसेवा कर रहे हैं। मेरा आशीर्वाद आपके साथ है। **- अरविन्द पाण्डेय, सचिव**

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का 125वां निर्वाण दिवस सम्पन्न

आर्य समाज बालन्द (रोहतक), द्वारा पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का 125वां निर्वाण दिवस धूमधाम से मनाया गया। ब्रह्मा जगवीर शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया व डॉ. रामवीर शास्त्री व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती हेमा आर्या ने यज्ञ की शोभा बढ़ाई। प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सुशील कुमार एवं गुरुकुल चोटीपुरा की स्नातिका श्वेता, सुमेधा ने पं. गुरुदत्त की जीवनी का गुणगान किया। आर्य समाज बालन्द के प्रधान महाशय भगवान् सिंह ने सभी आगन्तुकों का धन्यवाद किया। **- जगवीर शास्त्री**

वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह

मंसूरी की तलहटी में स्थिति गुरुकुल पौन्धा, देहरादून का 15वां वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह 5, 6 व 7 जून 2015 को भव्य सम्मेलनों के साथ मनाया जाएगा। इस अवसर पर आर्य सम्मेलन, पुरोहित सम्मेलन, वेद-वेदांत सम्मेलन तथा गुरुकुल सम्मेलन एवं व्यायाम सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। कार्यक्रम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के भाषण, भजन कविताओं को सुनने एवं शारीरिक प्रदर्शन देखने का सुअवसर प्राप्त होगा। **आचार्य डॉ. धनंजय, मो. 09411106104**

प्रवेश सूचना

आर्य बाल गृह, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली

निराश्रित बालकों के संरक्षण, पोषण व शिक्षण का आवासीय गृह

भारत का एक मात्र आर्य बाल गृह जहां वंचित-उपेक्षित वर्गो के मातृ-पितृ विहीन बालकों का वर्तमान व भविष्य सुधारने के साथ-साथ उनकी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व चारित्रिक उन्नति सहित व्यक्तित्व के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाता है। विद्यालय में नये शैक्षणिक वर्ष 2015-16 का प्रवेश प्रारम्भ है। 4 से 7 वर्ष तक के बालकों को नर्सरी, पहली व दूसरी कक्षाओं में प्रवेश सुविधा उपलब्ध है।

चन्द्र आर्य विद्या मंदिर, छात्रावास, देसराज परिसर, सी ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

बालिकाओं के संरक्षण, पोषण एवं शिक्षण का आवासीय केन्द्र

देश में नारी सशक्तिकरण का एक मात्र ऐसा केन्द्र जहां वंचित-उपेक्षित वर्गो की मातृ-पितृ विहीन बालिकाओं का वर्तमान तथा भविष्य सुधारने के साथ-साथ उनकी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व चारित्रिक उन्नति सहित व्यक्तित्व के समग्र विकास पर ध्यान दिया जाता है। विद्यालय में नये शैक्षणिक वर्ष 2015-16 का प्रवेश प्रारम्भ है। 11 वर्ष या इससे ऊपर तक की कुछ बालिकाओं को छठी व उससे ऊपर की कक्षाओं में प्रवेश दिये जाने की सुविधा है।

संपर्क सूत्र : 011-26316604, 26840229, 011-23260428, 23272084

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36-16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30-8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778

E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

18 मई से 24 मई, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21 मई/22 मई, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 मई, 2015

पृष्ठ 1 का शेष दिल्ली में 50 ...

के लिए रेलवे विभाग ने लोक कल्याण की भावना से आर्य समाज मंदिर को भूमि उपलब्ध करवाई थी। जिसका रिकार्ड रेलवे विभाग में विद्यमान है। वर्तमान में तीस हजारी कोर्ट से करोल बाग तक फ्लाई ओवर का निर्माण कार्य चल रहा है, उसके नीचे सड़क को चौड़ा किया जाना है। दिल्ली सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने एम.सी.डी. विभाग के सौतेले व्यवहार का दिग्दर्शन जन समुदाय को समाचार पत्रों के माध्यम से कराया, क्योंकि इस फ्लाई ओवर के रास्ते में आ रहे पाँच मंदिरों को एम.सी.डी. द्वारा अतिरिक्त प्लॉट आबंटित कर दिये गये तथा गुरुद्वारे और मस्जिद के रास्ते में आने के कारण फ्लाई ओवर को मोड़ देकर गुरुद्वारे व मस्जिद को बचाते हुए निकाला गया है, लेकिन एक मात्र आर्य समाज मंदिर को बिना किसी नोटिस अथवा पूर्व सूचना के ध्वस्त कर दिया गया है। यह उपरोक्त विभागों का सौतेला व्यवहार ही नहीं अपितु मनमानी भी है, जिसे आर्य समाज कदापि सहन नहीं कर सकता। एम.सी.डी. विभाग का व्यवहार समाज और राष्ट्र के लिए बड़ा घातक है, जिसके लिए आर्य समाज जन जागृति और जन आन्दोलन के लिए आगे आएगा।

इस मंदिर के संरक्षण हेतु समय-समय पर समाचार पत्रों में अपील भेजी गयी परन्तु किसी भी विभाग अथवा राजनायकों द्वारा कोई भी प्रतिक्रिया संज्ञान में नहीं आयी। यह महद् आश्चर्य की बात है कि इस देश की स्वतंत्रता में जहां आर्य समाज ने महान् बलिदान किये वहां आज भारत वर्ष में अपने ही देश में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विश्व की शिरोमणि समाज सुधारक संस्था आर्य समाज मंदिर को संरक्षण प्राप्त नहीं हो रहा है, इससे बड़ी विडम्बना और क्या हो सकती है? लेकिन इस कुकृत्य को अंजाम देने वाले अधिकारियों के संज्ञान हेतु कथन है कि जहां आर्य समाज ने स्वतंत्रता आन्दोलन में 85 प्रतिशत योगदान किया, हैदराबाद सत्याग्रह में बलिदान देकर भारतीय पूजा पद्धति को पुनः स्वीकृत कराया, वहीं आज आर्य समाज, आर्य समाज मंदिर को संरक्षण हेतु सत्याग्रह के लिए तैयार है। इस पवित्र स्थली पर यज्ञ प्रारम्भ कर धरना-प्रदर्शन हेतु जन चेतना के लिए आर्यजन उपस्थित हैं।

-संपादक

प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री को विरोध पत्र निम्न पते पर भेजें

प्रधानमंत्री भारत सरकार
7 रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली-11
फैक्स- 23019545-23016857
www.narendramodi.in
facebook.com/narendramodi.official
twitter.com/+narendramodi

मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार,
दिल्ली सचिवालय, नई दिल्ली-2
ईमेल cmddehli.nic.in
facebook.com/aapkaarvind
twitter.com/arvindkejriwal7

मेयर, उत्तरी दिल्ली नगर निगम,
66ए/6 न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली 5,
ईमेल guptaravinder71@yahoo.com

कमिश्नर दिल्ली नगर निगम,
सिविक सैन्टर मिन्टो रोड, नई दिल्ली-2
email: commissioner@mcd.org.in

प्रतिष्ठा में,

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर का निर्वाचन संपन्न
श्री राकेश चौहान प्रधान बने

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू कशमीर का त्रैवार्षिक निर्वाचन रविवार दिनांक 3 मई 2015 को संपन्न हुआ। जिसमें श्री वैदिक विद्वान डॉ. योगेंद्र मुनि के सुपुत्र श्री राकेश चौहान जी को बहुमत के साथ प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। उन्हें अपनी कार्यकारिणी गठित करने के अधिकार सर्वसम्मति से सौंपे गए, जिसके अनुसार उन्होंने श्री रविकांत जी को मंत्री एवं श्री योगेश गुप्ता जी को कोषाध्यक्ष निर्वाचित किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रधान
राकेश चौहान

महासचिव
रवि कांत

कोषाध्यक्ष
योगेश गुप्ता

श्रद्धा, भक्ति के लिये शुद्ध हवन सामग्री जरूरी, आत्मिक शांति व प्रभू में आस्था रहेगी पूरी।

(एक उपयोगी संदेश)

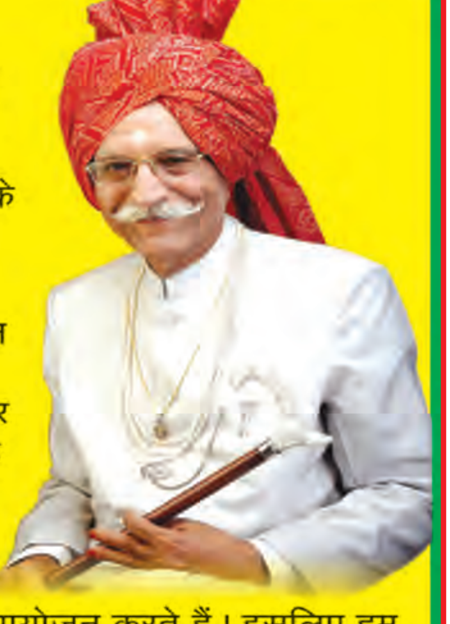

हवन करने की परम्परा :-
हम अपने यहां होने वाले शुभ अवसरों पर अपनी आस्था व संस्कृति के अनुरूप हवन का आयोजन करते हैं यानि कि हर बड़ा काम करने से पहले हवन करते हैं जिससे हमारे सत्कर्मों की सुगन्धि सब दिशाओं में फैले तथा आस पास के वातावरण को भी शुद्ध बनाए।

हवन की उपयोगिता :-
आस्था और भक्ति के प्रतीक हवन को करने का विचार मन में आते ही मानसिक आनंद की अनुभूति होने लगती है। हवन में डाली जाने वाली हवन सामग्री आयुर्वेद के अनुसार औषधि आदि गुणों से युक्त जड़ी बूटियों से बनी हो तो यह अग्नि में पड़कर सर्वत्र व्याप्त हो जाती है, घर के हर कोने में फैलकर रोग के कीटाणुओं का विनाश भी करती है।

हवन के लिए अच्छी हवन सामग्री की जरूरत क्यों ?
हम आस्था व भक्ति को मूर्त रूप देने के लिए हवन का आयोजन करते हैं। इसलिए हम शुद्ध देसी घी खरीदते हैं अपनी पसंद के ब्राण्ड के अनुसार। क्योंकि हमें अच्छी हवन सामग्री की सही जानकारी नहीं होती इसलिए हम हवन सामग्री के लिए दुकानदार भाईयों की पसंद पर निर्भर हो जाते हैं और उन्हीं की पसन्द से हवन सामग्री खरीदते हैं।

एक अच्छी हवन सामग्री उत्तम तकनीक द्वारा शुद्ध, पवित्र एवं प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से तैयार की जाती है। मेरा आपसे अनुरोध है कि शुद्ध देसी घी के प्रयोग के साथ साथ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से निर्मित एक अच्छी हवन सामग्री का भी प्रयोग करें। इससे आपकी साधना भी पूरी होगी व वातावरण भी शुद्ध होगा।

मेरी ऐसी मान्यता है कि दिन अगर हवन से शुरू हो तो शुभ ही शुभ होता है। इसका जीता जागता उदाहरण मैं स्वयं हूँ क्योंकि मेरी दिनचर्या में हवन सर्वोपरि है। मैं अपने घर व फैक्ट्री में नित्य प्रतिदिन हवन करता हूँ।

आपका शुभेच्छु
महाशय धर्मपाल

सौजन्य : MDH

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रेस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह